

# स्थल के रूप- मैदान

# INDIA- RELIEF & STRUCTURE

By: संजय कुमार

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

महाराजा बहादुर राम रण विजय प्रसाद सिंह कॉलेज  
(महाराजा कॉलेज),आरा

CC- 204

UNIT- 1

भाग-2

# भारत के प्रमुख मैदान

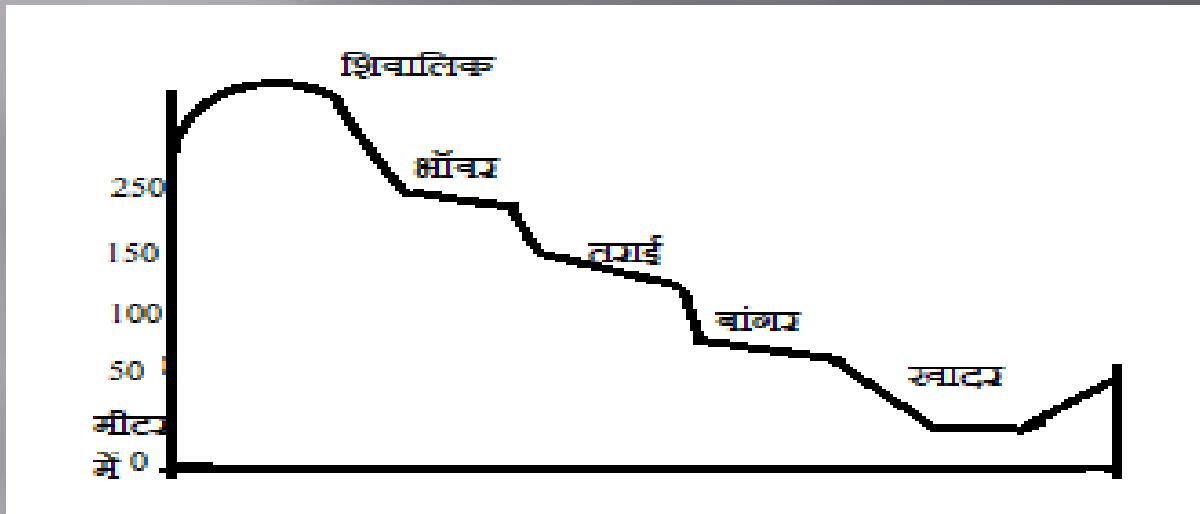
- भारत में हिमालय और दक्षिणी पठारी भाग के बीच के फैले बहुत मैदान को सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान कहा जाता है। इस मैदान की औसत ऊँचाई 50-150 मीटर है। जो 7.5 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर फैला है। सरचना की दृष्टि से यह एक गर्त भाग है। इस गर्त भाग में हिमालय और दक्षिणी पठारी भाग से आनेवाली नदियों द्वारा अवसादों के निक्षेप से मैदान का विकास हुआ है। यह मैदान सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नद के तीसरे फैला है। धरातलीय विशेषताओं के आधार पर इस मैदान को दो भागों में बाँटा जाता है।
- सिंधु का मैदान
- गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान
- तीसरा मैदान

# भारत के मैदान

- **सिंधु का मैदान-** इसके अंतर्गत पंजाब, हरियाणा, राजस्थान तथा दिल्ली का मैदान शामिल है। इसकी सामान्य ढाल दक्षिण- पश्चिम तथा दक्षिण की ओर है।
- **गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान-** इस मैदान का का विस्तार उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम राज्यों के 4 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर फैला है। गंगा-ब्रह्मपुत्र के इस मैदान को पुनः चार उपभागों में बाँटा जाता है।
- **ऊपरी गंगा का मैदानी** भाग का विस्तार दिल्ली से प्रयागराज तक है। इस प्रदेश की सामान्य ढाल परब तथा दक्षिण-पूर्व है। इस प्रदेश में नदियों का बहाव सामानांतर क्रम में मिलता है। इस प्रदेश की औसत ऊँचाई 100-200 मीटर है।
- **मध्यवर्ती गंगा का मैदान-** इस मैदानी भाग का विस्तार प्रयागराज से राजमहल तक है। है। इस प्रदेश की औसत ऊँचाई 50-100 मीटर है। इस भाग में नूदियां विसर्प या मियाड़र करती हर्दी बहती हैं। जिससे चौराहा, गोखुर, झौल, प्राकृतिक बांध, बाढ़ का मैदान और दियर जैसी विशेषताएँ मिलती हैं।
- **निम्न गंगा का मैदान-** राजमहल से आगे 50 मीटर से कम औसत ऊँचाई वाला यह वह क्षेत्र है जिसमें गंगा नदी और ब्रह्मपुत्र नद मिलकर बहती हैं। इनके मिलने से विश्व के सबसे बड़े डेल्टा का निर्माण हुआ है। इसका विस्तार 1.86 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर है।
- **ब्रह्मपुत्र का मैदान-** यह एक रैम्प धाटी क्षेत्र है, जो मेघालय पठार और हिमालय पर्वत के बीच ऐक लंबे एवं पतले मैदान के रूप में विस्तृत है। इस मैदान की औसत ऊँचाई 50-200 मीटर है।

# भारत के मैदान

मिट्टी की विशेषता एवं ढाल के आधार पर भारत के वृहत मैदान को चार भागों में बाँटा जाता है



मैदान का पार्श्वचित्र

# भारत के मैदान

- **भाँवर मैदानः** यह शिवालिक के पाद में इसके समानांतर विकसित मैदान है। जिसकी ऊँचाई 150-250 मीटर है। संरचना की दृष्टि से यह जलौढ़ पंक एवं गुटिकाजड़ित मैदान है। पारगम्यता और संरक्षिता के कारण कवल बड़ी नदियों का जल धरातल पर प्रवाहित होता दिखता है।

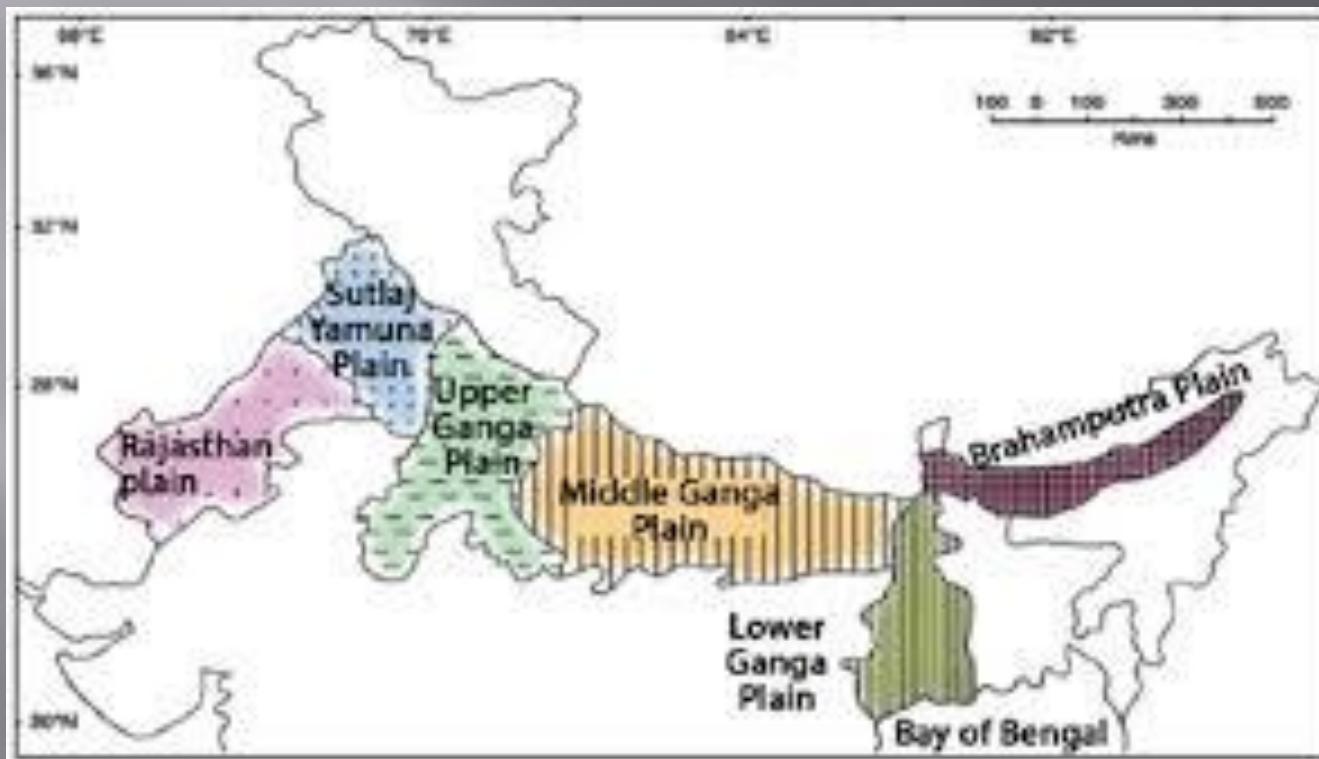
# भारत के मैदान

- **तराई मैदानः** भाँवर मैदान के दक्षिण जहाँ नदियां पुनः धरातल पर निकलकर बहती हैं, तराई मैदान का विकास हुआ है। इस मैदान की औसत ऊँचाई 150-200 मीटर है। यहाँ दलदली भूमि का विकास हुआ है। जिसमें जंगल का विस्तार मिलता है।
- **बांगर मैदानः** तराई मैदान के दक्षिण में बांगर मैदान का विकास मिलता है। यह वर्तमान में बाढ़रहित मैदान है जो पराने जुलोढ़ के जमाव का परिणाम है। इस मैदान की औसत ऊँचाई 100-150 मीटर है।
- **खादर मैदानः** खादर मैदान मूलतः नवीन जलोढ़ मैदान हैं जो कृषि के लिए काफी उपेजाऊ मानी जाती हैं। इस मैदान की औसत ऊँचाई 100 मीटर से कम है।

# भारत के मैदान



# भारत के मैदान



# भारत के मैदान

- तीसरा मैदान- प्रायद्वीपीय आकृति होने के कारण भारत के दोनों तरफ पर मैदान का विकास मिलता है। जिसे पूर्वी तीसरा मैदान और पश्चिमी तीसरा मैदान कहा जाता है। इसका निर्माण नदियों के निक्षेपण और भूसंचलन से हुआ है। भारत के तीसरा मैदान की कुल लंबाई द्वीप समूहों सहित 7516 किलोमीटर (5422 किलोमीटर मुख्य भूमि का और 2094 किलोमीटर द्वीपीय क्षेत्र) है।

# भारत के मैदान

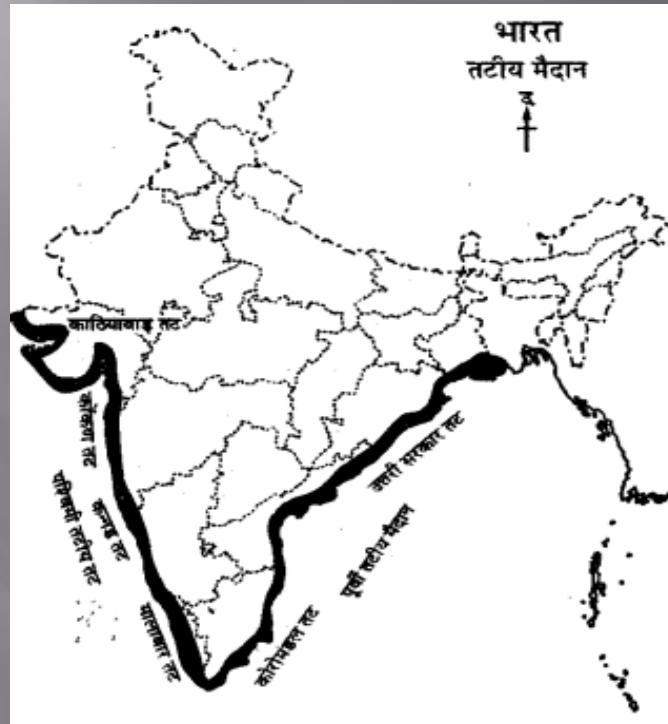
- **पश्चिमी तटीय मैदान:** इस तटीय मैदान का विस्तार खंभात की खाड़ी से लेकर कुमारी अंतरीप तक है। लगभग 1600 किलोमीटर की लंबाई में फैले इस मैदान की औसत चौड़ाई 64 किलोमीटर है। इस मैदान की सर्वाधिक चौड़ाई गुजरात में 80 किलोमीटर तथा सबसे कम चौड़ाई कर्नाटक-गोवा के तट पर है। भ्रंश एवं धूंसान क्रिया के कारण यह तट संकीर्ण या सँकरा है। गुजरात से लेकर केरल तक इस मैदान के अंतर्गत क्रमशः कच्छ-काठियावाड़ का मैदान, कोंकण का मैदान, कन्नाड़ा का मैदान, और मालाबार का मैदान शामिल हैं।



# भारत के मैदान

- भारत में सबसे लंबी तटरेखा वाला राज्य गुजरात है जिसकी कुल तटीय लंबाई 1214 किमी है।
- भारत की सबसे छोटी तटरेखा गोवा में है।
- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की तटरेखा 1,900 किलोमीटर से अधिक और केंद्र शासित प्रदेशों में सबसे लंबी तटरेखा के साथ आता है।
- भारत में 9 तटीय राज्य हैं:- गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, ओडिशा और पश्चिम बंगाल। ये सभी राज्य भारत की लंबी तटरेखा का हिस्सा हैं, जो अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर से लगी हुई हैं।

# भारत के मैदान



मानचित्र: भारत का पूर्वी एवं पश्चिमी तट

# भारत के मैदान

- **पूर्वी तटीय मैदानः** पूर्वी तटीय मैदान का विस्तार गंगा के महाने से लेकर कमारी अंतर्रीप तक बंगाल की खाड़ी और पूर्वी घाटे के बीच है। पर्शियन बंगाल तट से लेकर तमिलनाडु तक यह मैदान मट्ट ढाल वाला और 80-100 किलोमीटर तक चौड़ा है। तटीय भाग अधिक चौड़ा होने के कारण नदिया यहाँ मंद गति से बहती है और डेल्टा का निर्माण करती है। पूर्वी मैदान को उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः बंगाल का तट, उत्कल तट, उत्तरी सरकार तट और कोरोमडल तट कहा जाता है।
- तटीय मैदानों की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी उपजाऊ मिट्टी है, जो विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए बहुत उपयुक्त है। चावल यहाँ की प्राथमिक फसल है, लेकिन अन्य फसलें भी बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में बड़े-बड़े बदरगाह मौजूद हैं, जो विदेशी व्यापार और परिवहन के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये बदरगाह देश के कुल विदेशी व्यापार का लगभग 98% संभालते हैं।

# भारत के मैदान

## ■ तटीय मैदानों का महत्व

- ये तटीय मैदान उपजाऊ मिट्टी से ढँके हुए हैं। इन क्षेत्रों में चावल मुख्य फसल है। पेरा तट नाशियल के पेड़ों से ढँका हुआ है। तट की पर्वत लंबाई में बड़े और छोटे बदरगाह हैं जो व्यापार करने में मदद करते हैं। भारत का लगभग 98% अंतर्राष्ट्रीय व्यापार इन्हीं बदरगाहों के माध्यम से किया जाता है। इन मैदानों की तलछटी चट्टानों में खनिज तेल के बड़े भंडार होने की संभावना है। केरल तट के बालू में बड़ी मात्रा में मोनोजाइट है जिसका उपयोग परमणि ऊर्जा के लिए किया जाता है। मछली पकड़ना तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। जबकि गुजरात के निचले इलाके नमक उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं।

# भारत के मैदान

- भारत के तटीय लंबाई 1970 के दशक में भारतीय सर्वेक्षण विभाग (Survey of India) द्वारा किए गए माप पर आधारित है।
- भारत के तट नौ भारतीय राज्यों और चार केंद्र शासित प्रदेशों तक फैली हुई है।
- भारत की तटरेखा अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से घिरी हुई है।
- भारतीय तट पश्चिम में कच्छ के रण से लेकर पूर्व में पश्चिम बंगाल तक 6,150 किलोमीटर तक फैला है।
- गुजरात के बाद भारत की दूसरी सबसे लंबी तटरेखा वाला राज्य आंध्र प्रदेश है।

# बिहार का मैदान

- बिहार प्रदेश में स्थलरूप के अंतर्गत पहाड़, पठार एवं मैदान तीनों ही मिलता है। इसमें बिहार का मैदानी प्रदेश मुख्य रूप से गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों जैसे- गंडक, कोसी, बागमती, महानंदा, सोन, पुनर्पुन, फल्गु, इत्यादि द्वारा लाए गए मलवों के निक्षेप से बना है। गंगा नदी में उत्तर बिहार से आकर मिलनेवाली सहायक नदियों में गंडक, कोसी, कमला, बलान, महानंदा, बागमती, घाघरा, बढ़ी गडक तथा दक्षिण बिहार से आकर मिलनेवाली सहायक नदियों में सोन, पुनर्पुन, फल्गु, कर्मनाशा, मोहाने, दरधा, मोरहर, कोयल, चैनन इत्यादि शामिल हैं। यहाँ नए निक्षेपण वाले मैदान को खादर और पुराने निक्षेपित मैदान को बागर कहा जाता है।

# बिहार का मैदान

- उत्तर बिहार की कोसी नदी हर वर्ष भयंकर बाढ़ से जानमाल की हानि करती है। इस कारण कोसी नदी को बिहार का शोक कहा गया है। पश्चिम से पूरब की ओर लगभग बीचों-बीच से बहती हुई बिहार में गंगा नदी पूरे बिहार प्रदेश को दो भागों में बांटती है। गंगा नदी के उत्तर में स्थित मैदान को बिहार का उत्तरी मैदान और दक्षिण स्थित मैदान को बिहार का दक्षिणी मैदान कहा जाता है। इसमें नई (खादर) और पुरानी (बांगर) जलोढ़ मिट्टियां शामिल हैं जो अत्यत ही उपजाऊ हैं और कृषि के लिये इसे काफी उपयक्त माना गया है। दूसरे शब्दों में - गंगा तथा इसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से बिहार का जलोढ़ मैदान बना है। समतल भूमि, जल की उपलब्धता कृषि की सुविधा और अन्य सुविधाओं के कारण मैदानी भागों में घनी औबादी पाई जाती है।

# बिहार की प्रमुख नदियाँ



# बिहार का मैदान

- बिहार में मुख्य रूप से जलोढ़ मिट्टी की प्रधानता है। इसके अलावा नेपाल के सीमा के निकट तराई मिट्टी, पश्चिमी चंपारण के पर्वतीय भाग में दलदली मिट्टी, उत्तर बिहार के बड़े क्षेत्रों में बालसुंदरी मिट्टी और दक्षिणी पठारी क्षेत्रों में कैमूर और रोहतास के क्षेत्रों में बलथर मिट्टी पाई जाती है।

# बिहार का मैदान

- बिहार के मैदान को भी पुनः कई भागों में बाँटा जाता है-
- मिथिला का मैदान बिहार और नेपाल के तराई क्षेत्र में स्थित एक उपजाऊ जलोदय मैदान है, जो हिमालय की निचली श्रेणियाँ और गंगा नदी के बीच फैला हुआ है। यह गडक, बागमती और कमला जैसी कई नदियों से बना है।
- मगध का मैदान मध्य गंगा के मैदान का हिस्सा हैं, जो बिहार के मध्य और पर्वती भागों में स्थित हैं। पटना और गया जिलों के आसपास, गगा नदी के दक्षिण में स्थित है। इस क्षेत्र में उपजाऊ जलोदय मिट्टी पाई जाती है, जो कृषि के लिए बहुत उपयुक्त है।
- अंग का मैदान अंगिका भाषी क्षेत्र का हिस्सा है, जिसमें भागलपुर, मंगेर, बांका और जमुई जैसे जिले शामिल हैं। इस क्षेत्र को सामरिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता था, जो गगा और अन्य नदियों से सिंचित होता है। प्राचीन अंग महाजनपद की राजधानी चंपा इसी क्षेत्र में थी।
- इन दोनों मैदानों की समानताएँ हैं कि दोनों ही गंगा नदी के मैदान का हिस्सा हैं और सोन, गगा और उनकी सहायक नदियों से सिंचित होते हैं। ये दोनों क्षेत्र उपजाऊ मिट्टी के कारण चावल और अनाज जैसी फसलों के उत्पादन के लिए बहुत उपयुक्त हैं। दोनों क्षेत्र बाढ़ प्रवण हैं, खासकर कोसी जैसी नदियों की बाढ़ से प्रभावित होते हैं।

# बिहार का मैदान

- कृषि:- बच्चों, बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। बिहार देश का ऐसा राज्य है, जिसने किसानों की दुर्दशा को सुधार करने और कृषि क्षेत्र में सुधार करने के उद्देश्य से कृषि मंत्रिमंडल का गठन किया है जिसमें 18 विभागों को शामिल किया गया हैं। कृषि की दृष्टि से यहाँ भद्र, खरीफ (अगहनी), रबी और गरमा चार फसल छूतें हैं। भद्र की फसलें मई से जून के बीच बोई जाती हैं और अगस्त-सितंबर में काटी जाती है। उदाहरण के लिए - ज्वार, बाजरा, मकई। खरीफ की फसलें मध्य जन से अगस्त के बीच बोई जाती हैं और नवंबर-दिसंबर में काट ली जाती हैं। उदाहरण के लिए - धान, ज्वार, बाजरा, अरहर। रबी की फसलें अक्टूबर-नवंबर के मध्य बोई जाती हैं और मार्च-अप्रैल में काट ली जाती हैं। उदाहरण के लिए - गेहूँ, जौ, दलहन, तेलहन। गरमा की फसलें गर्मी के दिनों के दौरान उगाई जाती हैं। उदाहरण के लिए - खीरा, ककरी, तरबज, सब्जी इत्यादि। बिहार में उपजने वाली फसलों को खाद्य और व्यावसायिक फसलों में बाँटा जाता है। खाद्य फसलों में धान, गेहूँ, मक्का, दलहन, तेलहन, मोटा अनाज, आलू, प्याज, हरी सब्जियां शामिल हैं तथा व्यावसायिक फसलों में गन्ना, तबाक, जट, फूल, मसाले प्रमुख हैं। हाजीपुर का केला, दरभंगा का आम तथा मीखानी एवं मुजफ्फरपुर की लीची तथा शहद बहुत प्रसिद्ध हैं।

- बिहार की कृषि में मखाना का महत्वपूर्ण स्थान है। मखाना पोषक तत्वों से भरपूर एक सपरफूड है, जो पानी में उगता है। मखाना का सबसे अधिक उत्पादन बिहार में होता है। बिहार में इसकी खेती उत्तर बिहार के सीमांचल और मिथिलांचल के अन्तर्गत मध्यबन्दी, दरभंगा, सीतामढ़ी, सहरसा, और कटिहार जिलों में की जाती है। राष्ट्रीय मखाना बोर्ड का कार्यालय पूर्णिया में स्थापित किया गया है।
- राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा (समस्तीपुर) में स्थापित है।
- इसके अन्तर्गत 36 जिलों में खोले गए कृषि विज्ञान केंद्र बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले फसलों तथा बागवानी को बढ़ावा देने में सक्षम है।
- राज्य में लीची, मखाना तथा पान पर शोध के लिए मुजफ्फरपुर में राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र की स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा की गयी है।



# ধন্যবাদ